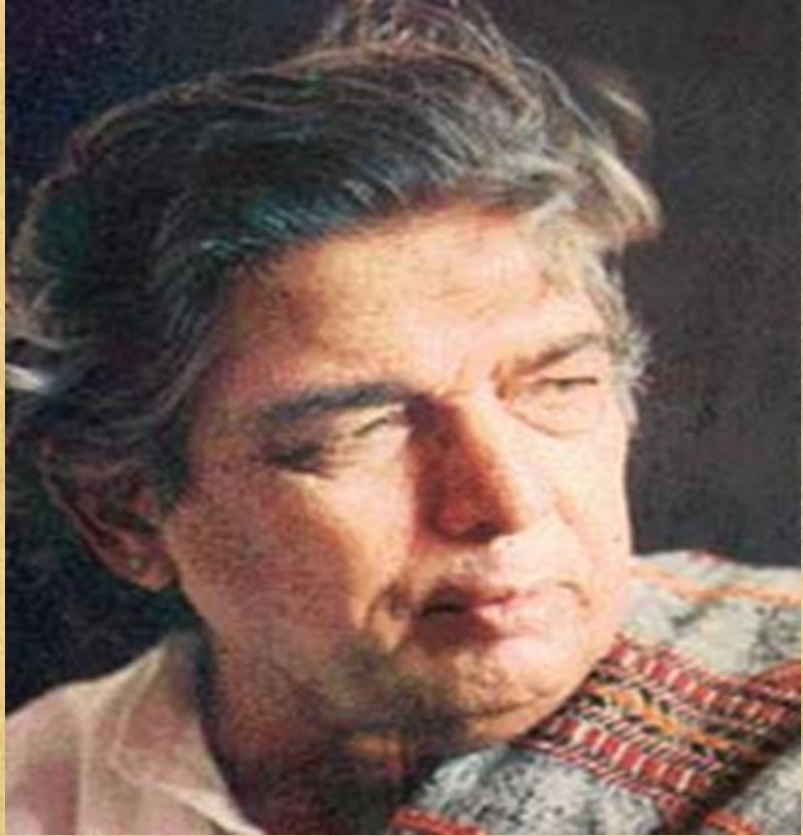


कर चले हम फिदा

—कैफ़ी आजमी



कक्षा—दस

उद्देश्य

- सैनिकों के चुनौतियों से भरे संघर्षशील जीवन का ज्ञान ।
- उर्दू शायरी से परिचय ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत कविता कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित उर्दू कविता है। सन् 1962 में हुए भारत और चीन के युद्ध पर आधारित बनी हकीकत नामक फ़िल्म के निर्देशक चेतन आनंद थे। इस कविता को फ़िल्म में गाने के रूप में फ़िल्माया गया।

इस कविता में सीमा पर युद्ध करते सैनिकों की देशवासियों के प्रति अपेक्षाओं को प्रकट किया गया है।

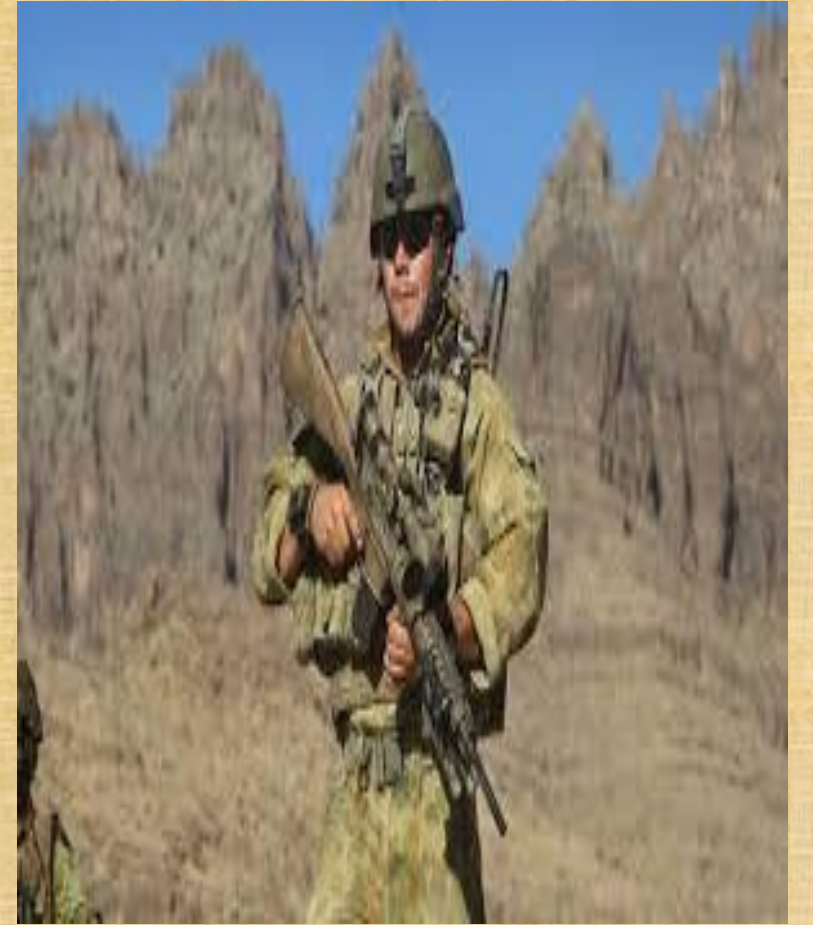
कर चले हम फ़िदा जानो—तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते—मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

अर्थात्—अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान
देने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए।



ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

अर्थात्— युवाओं को अपनी जान पर खेलकर
इस धरती रूपी दुल्हन की रक्षा करनी है।



राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

अर्थात्—सैनिक सर पर कफ़न बांधकर
शत्रुओं का सामना करना चाहते हैं।



खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो ।



अर्थात्— अपने देश की ओर नज़र उठाने वाले शत्रुओं के
नाश के लिए जान की बाजी लगा दो ।